बीना जोशी
प्रधानाध्यापिका
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
खतेड़ा, लोहाघाट, चंपावत

समुदाय का विश्वास बचाना जरूरी

सहायक अध्यापक – चन्द्र किशोर पाण्डेय, कुंवर सिंह पर्थोली
सी.आर.सी.सी. – श्री मुकेश शाह
भोजन माता – गंगा देवी, जानकी देवी
नामांकन – 32

लोहाघाट से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, खतेड़ा गांव के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पहुंचने के लिए पहले किमतोली जाना पड़ता है। किमतोली से खतेड़ा जाते समय दाहिने ओर आपको बर्फ से ढका हिमालय अपनी प्राकृतिक छटा बिखेरता नजर आएगा। हिमालय यहां से बहुत दूर है पर ऐसा लगता है कि कुछ ही दूरी पर है। खतेड़ा पहुंचने के लिए पहले पैदल जाना पड़ता था, परन्तु अब सड़क का निर्माण हो जाने के कारण अब आपको अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। स्कूल पहुंचने पर आपकी मुलाकात होगी, बीना जोशी मैडम से। जिन्होंने खतेड़ा के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मे 2005 मे सहायक अध्यापिका के रूप मे नियुक्ति पायी थी । बीना जी ने M.A., BEd o BTC की डिग्रियां प्राप्त की हैं। और वर्तमान मे मैडम स्कूल में हिंदी, सोसल स्टडीज और संस्कृत पढ़ाती हैं। इसके पहले भी वे दूसरे स्कूल में शिक्षिका रह चुकी हैं। उनका जब इस स्कूल में आना हुआ तो इस स्कूल में 70 शिक्षार्थी थे। शायद उस समय तक यहां के क्षेत्र मे लड़कियों को पढ़ाने का प्रचलन नहीं था। इस संबंध में बीना जी कहती हैं, 'ये मेरे लिए चुनौती था लेकिन मैंने अभिभावकों से बातचीत करके लड़कियों का भी दाखिला विद्यालय में करवाया।' अगर देखा जाये तो ग्राम में काफी कम लोग शिक्षित हैं। इसी कारण वे लड़कियों

को स्कूल नहीं भेजते हैं। मैडम से बातचीत होने पर वे अपने बारे में कहती हैं कि शिक्षिका बनने में मेरे पिता का बहुत बड़ा योगदान है । बीना जी की कक्षा शिक्षण की अपनी अलग ही शैली है लेकिन इसमें उन्हें सहयोगी शिक्षक साथियों का भी पूरा सहयोग मिलता हैं। शिक्षण के मामले मे बीना जी काफी रचनात्मक हैं और शिक्षण हेतु टी.एल.एम. बनाती रहती हैं। उसी के माध्यम से बच्चों को आसानी से पढ़ाती हैं। साथ ही बच्चों के साथ उनका व्यवहार बहुत अच्छा है, जिसे बच्चे भी स्वीकारते हैं। वे बच्चों को कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए तैयार करती हैं और बच्चे भी पूरा सहयोग देते है। साथ ही गांव के लोगों के साथ बैठक के माध्यम से बातचीत करती हैं कि बच्चों की शिक्षा में सहयोग करें। ग्राम प्रधान से बातचीत करके ग्राम के लिए भी कुछ अच्छा करने का प्रयास करती हैं। खतेड़ा गांव के अधिकांश लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। अतः वे लोग सुबह ही अपने–अपने खेतों पर चले जाते हैं और बच्चों पर ध्यान ही नहीं देते। यहां तक कि उन्हे कई बार यह भी पता नहीं होता कि बच्चे स्कूल गए हैं या नही। कई बार वे स्वयं बच्चों को स्कूल नहीं आने देकर अपने साथ खेत मे ले जाते हैं। घर व खेतों मे हाथ बटाने के कारण लड़कियां ज्यादातर अनुपस्थित रहती हैं। इसी करण कई बार अभिभावकों को घर जाकर समझाना पड़ता है कि बच्चों को स्कूल भेजें। बीना जी अपनी सोच एक शिक्षिका के रूप मे इस प्रकार बताती हैं ।

वर्तमान समय में वसुन्धरा पर शिक्षा रूपी सूरज का प्रकाश धीमा होता जा रहा है। अगर ऐसे ही चलता रहा तो वसुन्धरा अज्ञान रूपी अंधकार में डूब जायेगी। इस वसुन्धरा को ज्ञान के मंदिर में हम सभी भक्त जनों को अपने कर्तव्य का सही– सही निर्वहन करके पुनः इस ज्योति की लौ को जलाना

होगा। जिसके लिए सर्वप्रथम पहल हम शिक्षकों को ही करनी होगी। एक स्तंभ से शुरू करेंगे तो सकारात्मक परिणाम निकलेंगे ही। इसके लिए हमें कुछ बिन्दुओ पर चिंतन करना होगा। ऊर्जावान तथा सकारात्मक सोच वाले व्यक्तियों के संपर्क में रहें, जिससे आप में भी ऊर्जा का निरन्तर संचार होगा। बच्चों में अंतर्निहित क्षमताओं को पहचान कर उन क्षमताओं का विकास करना और उनके लिए विभिन्न गतिविधियों का विद्यालय में आयोजन कर शिक्षण कार्य किया जाना चाहिए। गतिविधियों के द्वारा ही छात्र की क्षमता व रुचियों को जाना जा सकता है। रुचि और क्षमता अनुसार ही उसे कार्य दिया जाना चाहिए ताकि वह उसे अच्छी तरह उत्साहपूर्वक करे। उदाहरण के लिए एक बच्चा लोकनृत्य और लोकगीत बहुत अच्छा गाता है तो सबसे पहले उसे उसी क्षेत्र में अधिक अवसर देने चाहिए। लोकगीतों के माध्यम से उसका शब्द भंडार बढ़ेगा, उच्चारण शुद्ध होगा, आत्मविश्वास बढ़ेगा तथा धीरे धीरे अन्य क्षेत्रों में भी उसका विकास होगा। कक्षा शिक्षण कराने से पहले यह जानना भी जरूरी है कि बच्चा क्या चाहता है। अगर शिक्षक को यह पता चल जाये तो शिक्षण कार्य करने में आसानी हो जाती है। इसलिए बच्चे के मन को पहचानना भी शिक्षक की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। बच्चे जिस विधि से सीखना चाहते हैं उन्हे उसी विधि से सिखाना चाहिए। किसी एक विधि से लगातार शिक्षण कार्य करने से भी शिक्षण कार्य में नीरसता आ जाती है। समय अनुसार तथा विषयानुसार शिक्षण विधियों को परिवर्तित करते रहना चाहिए। रचनात्मक तथा सृजनात्मक कार्य से भी छात्रों को जोड़े रखें ताकि भविष्य के लिए वह अपने आपको तैयार कर सकें। छात्रों को जो भी चीज करायी तथा सिखाई जाती है उसका तुरन्त विश्लेषण करना चाहिए। बच्चे की कमियां व अच्छाई को बताकर उसका

निदान पुरस्कार प्रदान कर करना भी अति आवश्यक है। बच्चे में निहित अच्छाई अधिक से अधिक उजागर करें ताकि उसमें जो भी कमी है वह धीरे– धीरे स्वतः ही समाप्त हो जाए। बच्चे के प्रति ये धारणा न बनायें कि उसे कुछ नहीं आता है क्योंकि ईश्वर ने उसे सुंदर संसार में कुछ तो बनाकर भेजा होगा। छात्र को एक निरीक्षक के रूप में माने। क्योंकि, वह हमारी हर गतिविधि का हर पल निरीक्षण व ध्परीक्षण करता है तथा हमारा रिपोर्टकार्ड बनाकर प्रतिदिन परिवार तथा समाज के सामने प्रस्तुत करता है। विश्वास है तो सब कुछ है। खुद पर विश्वास रखें कि हम सब कुछ कर सकते है। इस संदर्भ में एक छोटा सा प्रेरक प्रसंग है– ज्ञान, धन और विश्वास तीनों आपस मे अच्छे दोस्त थे। तीनों में बहुत प्रेम था एक समय ऐसा आया कि तीनों को एक दूसरे से अलग होना पड़ा। तीनों ने एक–दूसरे से पूछा कि कौन कहां जाएगा? ज्ञान ने कहा कि मैं मंदिर–मस्जिद–गुरुद्वारा जाऊंगा। धन बोला, महल और अमीरों के पास जाऊंगा। लेकिन विश्वास चुपचाप था। दोनों दोस्तों ने विश्वास से चुप रहने का कारण जाना तो विश्वास ने ठंडी आह भर के कहा कि एक बार में चला गया तो फिर कभी वापस लौटकर नहीं आऊंगा। इसलिए हमें किसी भी प्रकार से समाज का विश्वास नहीं तोड़ना चाहिए विश्वास के कारण ही अभिभावक हमें अपने बच्चे को सौंपता है। किसी भी बच्चे के उज्ज्वल भविष्य के साथ समाज के अन्य लोग भी सहभागिता करें तो ज्ञान रूपी प्रकाशपुंज और अधिक प्रकाशित होगा।

(बीना जोशी से हुई सतीश भास्कर की बातचीत पर आधारित)